यह मिश्रण जम गया तो गाय गर्भवती होती है और अगर मिश्रण नहीं जमता है तो गाय गाभिन नहीं होती है।

ङ. **अर्बोराइजेशन पैटर्न :** इस विधि द्वारा पशु के म्यूकस के पेटर्न की जांच कर गर्भ परीक्षण किया जाता है। मद या गर्मी के समय का म्यूकस सूखने के बाद एक फर्न पेटर्न बनाता है जो कि उसमें सोडियम क्लोराइड की उपस्थिति की वजह से होता है लेकिन गाभिन गाय के म्यूकस से ऐसा कोई फर्न पेटर्न नहीं बनता है।

अल्ट्रासाउंड विधि : यह एक आधुनिक विधि है जिसकी सहायता से 25 दिनों में ही गर्भ परीक्षण किया जा सकता है। साथ ही भ्रूण में होने वाले किसी भी प्रकार के विकार का पता लगाया जा सकता है। सबसे अहम् बात यह है कि इस विधि द्वारा 100 प्रतिशत सही जानकारी मिलती है। परन्तु यह विधि मंहगी है तथा इसमें समय भी ज्यादा लगता है।

वैसे तो गाभिन पशुओं की जांच एवं पहचान उपरोक्त विधियों द्वारा की जाती है लेकिन पशुपालकों/किसान भाइयों द्वारा बाह्यः लक्षणों को देख कर भी गाभिन होने की पहचान की जाती है। गर्भवती गाय या भैंस का ऋतुचक्र (गर्मी) का आना बंद हो जाता है। पशु शांत एवं सीधा स्वभाव का हो जाता है तथा धीरे धीरे चलता है। पशु का पेट धीरे धीरे बढ़ने लगता है। दूध गाढ़ा, कम और नमकीन स्वाद का हो जाता है। गर्भवती पशु का अयन 4–5 माह में काफी विकसित हो जाता है साथ ही साथ योनि भी बढ़ने लगती है। जैसे जैसे गर्भ काल बढ़ता है वैसे वैसे अयन भी बढता चला जाता है।

अ. शरीर का भार उत्तरोत्तर बढ़ने लगता है।

आ. पांच माह का गर्भ होने पर पशु के बैठे रहने पर गर्भाशय में बच्चे का हिलना डुलना देखा जा सकता है।

इ. अंतिम अवस्था में पुट्ठे नीचे बैठ जाते है तथा पूंछ का सिरा पूंछ के पास की हड्डी उठी हुई महसूस होती है।

पशुओं के गर्भ की जांच करते समय निम्नलिखित सावधानियां रखनी चाहिए

गर्भ की जांच केवल प्राशिक्षित पशुचिकित्सक से ही करवाना चाहिए। गुदा मार्ग से जांच कराते समय पशु अचछी तरह नियंत्रित होना चाहिए। बाजू पर हमेशा लेसदार पदार्थ जैसे पैराफिन आयल आदि लगाना चाहिए। कपड़े धोने वाले साबुन का प्रयोग कतई नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दुधारू पशुओं को काफी तकलीफ होती है।

Jandiyal Printing Press # 2553140

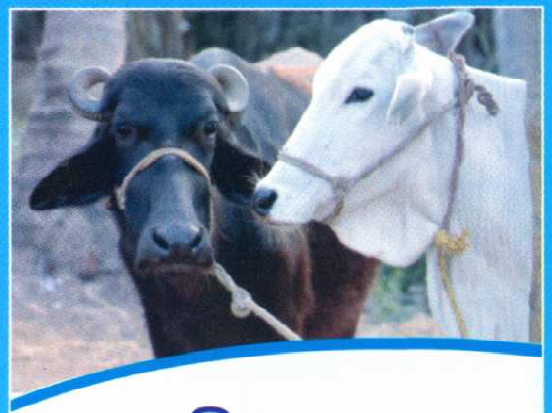

गाभिन गाय भैंस की जांच

डा. उत्सव शर्मा
प्राध्यापक
डा. सुधीर कुमार
सहायक प्राध्यापक
डा. अनिल कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक

मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान संकाय, रणबीर सिंह पुरा
शेर-ए-कश्मीर
कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू।

गर्भधारण वह प्रक्रिया है जिसमें मादा पशु के गर्भाशय में संगमन के बाद निषेचित भ्रूण बनने लगता है। गाय भैंसों में गर्भ की जांच का मुख्य उद्देश्य यह है कि कृत्रिम गर्भाधान या प्राकृतिक प्रजनन के बाद कम से कम समय में यह आश्वस्त होना है कि हमारी गाय या भैंस ने गर्भधारण किया है कि नहीं। गाय की बछिया प्रायः ढाई वर्ष में एवं भैंस की बछिया प्रायः साढ़े तीन वर्ष में गर्भधारण के योग्य हो जाती है। गर्भधारण या तो प्राकृतिक प्रजनन द्वारा या फिर कृत्रिम गर्भाधान द्वारा होता है। गर्भधारण के पश्चात गर्भ परीक्षण करना एक महत्पूर्ण कार्य है। यदि गर्भधारण हुआ है तो यह कितने दिनों का है तथा भ्रूण की क्या स्थिति है। यदि गर्भधारण नहीं हुआ है तो इसके कारणों की जानकारियां भी जल्द से जल्द पता लगाने में सहायक होती हैं, जो पशुपालकों को आर्थिक हानि से बचाता है। गाभिन गाय भैंसों की जांच एवं पहचान करके उसके प्रजनन क्षमता एवं प्रजनन दर को बढ़ाया जा सकता है। गर्भधारण न करने वाली गायों या भैसों को पुनः जल्द से जल्द प्रजनन करवाकर गर्भित किया जा सकता है। साथ ही साथ जांच के द्वारा मृत भ्रूण की पहचान आसानी से कर ली जाती है। ऐसा पाये जाने पर मृत भ्रूण को बाहर निकालकर एवं सही इलाज करके दुबारा प्रजनन करवाया जा सकता है। इस तरह गाभिन पशुओं की जांच, पशुपालकों की पशुपालन से अधिकतम लाभ उठाने में मदद करता है। सामान्य रूप से गाभिन गाय भैसों की

निम्नलिखित विधियों द्वारा जांच की जाती है।

गुदा मार्ग द्वारा जनन अंगों को स्पर्श करके : इस विधि में गाय या भैंस के मलाशय में हाथ डालकर जनन अंगों (Genital organs) की स्थिति देखकर गर्भ जांच किया जाता है जो कि 60 दिनों के बाद ही संम्भव हो पाता है।

गाय भैसों का मद (गर्मी) में नही आना : प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान के 21 दिनों के पश्चात यदि पशु फिर से मद में नही आता है तो ऐसा मान लिया जाता है कि वह पशु गाभिन है परन्तु यह सत प्रतिशत सही विधि नहीं है।

पेट की आकृति में वृद्धि : गर्भवती होने के पश्चात गाय भैसों में पेट की आकृति में वृद्धि होना शुरू हो जाती है। परन्तु इस विधि में गाय के गर्भवती होने का पता बहुत देर से लगता है। प्रायः 6 महीने की गर्भवती गाय की पेट की वृद्धि स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

रासायनिक परीक्षण के द्वारा : यह एक नई एवं विश्वसनीय विधि है जिसके द्वारा गाय या भैसों में लगभग 21 दिन में ही गर्भ की परीक्षा की जा सकती है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित टेस्ट आते है

क. **सोडियम बेन्जोइड इंडिकेटर टेस्ट द्वारा :** इस विधि में गाय की 3.5 मी.ली मूत्र परखनली में लेकर इसमें 0.5 मी.ली सोडियम बेन्जोइड इंडिकेटर नामक रसायनिक पदार्थ मिलाने पर तुरंत ही हरे रंग का हो जाता है। यदि यह हरा रंग 7–10 मिनट के अन्दर ही मूत्र के रंग में परिवर्तन हो जाता है तब गाय गाभिन नहीं होता है।

ख. **बेरियम क्लोराइड टेस्ट :** इस विधि में गाय की मूत्र एवं चार पांच बूंद में बेरियम क्लोराइड का सलूशन (एक प्रतिशत) मिलाते हैं। अगर मूत्र एवं बेरियम क्लोराइड का सलूशन का मिश्रण प्रिसिपिटेट नहीं होता है तो गाय गर्भवती मानी जाती है जबकि तीन मिनट के अंदर प्रिसिपिटेट होने पर गाय गाभिन नहीं समझा जाता है इस विधि का उपयोग 15–20 दिनों तक के गाभिन पशुओं में किया जा सकता है।

ग. **अल्कोहल मिल्क टेस्ट :** इस विधि में दूध एवं एबसोलुट अल्कोहल की बराबर मात्रा को मिलाकर 15 मिनट से 3 घंटे के लिए रख देते हैं। अगर दूध जम गया तो पशु गाभिन होती है परन्तु अगर मिश्रण में कोई बदलाव नहीं आता है तो पशु गर्भवती नहीं होती है। ध्यान रखना चाहिए कि मैसटाइटिस बीमारी में भी दूध जम जाता है।

घ. **कॉपरप सल्फेट टेस्ट :** इस विधि में जिस गाय की गर्भ परीक्षण करनी होती है उसकी 0.5 से 1.5 मी.ली दूध एवं 3 प्रतिशत कॉपर सल्फेट सलूशन मिलाकर रख देते है। अगर